

## LOK SABHA

Friday, July 28, 1967/Sravana 6, 1889  
(Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the  
Clock.

[MR. SPEAKER in the Chair]

ORAL ANSWERS TO  
QUESTIONS

Pumping sets

\*1441. Dr. Ram Manohar Lohia:  
Shri Madhu Limaye:  
Shri S. M. Banerjee:  
Shri George Fernandes:

Will the Minister of Industrial  
Development and Company Affairs  
be pleased to state:

(a) whether there is a move to  
produce pumping sets on a big scale  
by mobilising public sector and  
private sector resources;

(b) whether these sets will be  
made available to the farmers at  
subsidised rates; and

(c) if the answer to parts (a) and  
(b) above be in the negative, the  
reasons therefor?

The Minister of State in the Minis-  
try of Industrial Development and  
Company Affairs (Shri Raghunath  
Reddi): (a) and (b). No, Sir. The  
existing facilities are sufficient to  
meet the demand for such pumping  
sets. Till the end of 1966-1967, a  
pattern of subsidy was prescribed by  
the Government of India for all  
pumping sets supplied to farmers but  
with effect from the current year,  
this pattern has been discontinued  
and all the State Governments have

been advised to consider suitable  
subsidies in the context of their  
resources position.

(c) With reference to (a) the  
existing units are capable of meeting  
the demand. As regards (b) the  
question does not arise.

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष  
महोदय, मैं उस पम्पिंग सेट के बारे में  
पूछ रहा हूँ, जो इस समय उड़ीसा और  
आसाम में बजड़े पर लगा कर नदियों  
के पानी को उलीच रहा है। हमारे यहाँ  
कोई एक लाख मील लम्बी नदियाँ होंगी।  
अगर मंत्री महोदय हर दस मील पर एक  
पम्पिंग सेट लगा दें, तो दस हजार पम्पिंग  
सेट्स की आवश्यकता होगी और उनसे  
लगभग एक या दो करोड़ एकड़ भूमि को  
पानी मिल सकेगा। मैं यह जानना  
चाहता हूँ कि एक पम्पिंग सेट पर कितना  
खर्च पड़ता है, दस हजार पम्पिंग सेट्स  
पर कितना खर्च पड़ सकता है और ये  
पम्पिंग सेट कब तक तैयार हो जायेंगे,  
जिससे नदियों का पानी देश की खेती  
के लिए इस्तेमाल हो सके।

औद्योगिक विकास तथा समवसाय-कार्य  
मंत्री (श्री कृष्णचंद्र प्रसाद आहलूवाल): जो  
सवाल पूछा गया था, वह ऐसे पम्पिंग  
सेट्स के बारे में था, जो एग्रीकल्चरिस्ट्स  
इस्तेमाल करते हैं और उनकी  
बाबत हम ने बताया है कि  
जितनी जरूरत है, उससे ज्यादा पम्पिंग  
सेट्स यहाँ तैयार हो रहे हैं। मानरेबल  
मेम्बर ने बड़े हार्ड प्रेशर पम्पिंग सेट्स  
के बारे में पूछा है, जो नदियों का पानी  
खींच कर खेतों को पानी दे सकें। उन

को बनाने का इन्तजाम अभी तक हमारे यहां नहीं है। लेकिन इसके मुताल्लिक यू० एस० एस० आर० से जो प्राजेक्ट रिपोर्ट आई है, उस पर हम गौर कर रहे हैं। इस बात पर विचार किया जा रहा है, कि हम जल्दी ही पब्लिक सेक्टर में हाई प्रेशर पम्पिंग सेट्स बना सकें।

डा० राम मनोहर लोहिया : दूसरा सवाल पूछने से पहले क्या मैं यह भाषा करूँ कि महीने, दो महीने में यह मामला खरम हो जायेगा और काम चालू हो जायेगा, क्योंकि सरकार की योजनायें बरसात तक चलती हैं? क्या मंत्री महोदय उन्हीं पुराने पम्पों के बारे में बतायेंगे कि हर एक प्रदेश में अब तक कितने कितने पम्प लगे हुए हैं? उनको लिए इस का उत्तर देना आसान होगा, क्योंकि उन्हीं की पार्टी के सचिव ने इस बारे में एक दफा एक संकुल में बताया था, जो मशहूर है। लेकिन मैं मंत्री महोदय के मुँह से जानना चाहता हूँ कि प्रदेशवार कितने पम्पिंग सेट लगे हुए हैं।

श्री क्रिष्णवर्दीन अली अहमद : पहले सवाल का जवाब यह है कि हमारे पास अभी प्राजेक्ट रिपोर्ट आई थी, हमने उसकी रिवाइज किया। अब रिवाइज्ड प्राजेक्ट रिपोर्ट भी आई गई है और हम उम्मीद करते हैं कि इस बारे में जल्दी फैसला किया जायेगा और चन्द महीनों में काम शुरू हो जायेगा।

इस वक्त मेरे पास पम्पिंग सेटों के बारे में सूबेवार लिस्ट नहीं है। लेकिन मैं बाद में उसको देने के लिए तैयार हूँ। वह मेज पर रख दी जायेगी।

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, यह एक ऐसी इत्तिला है, जो मुझ जैसे नाचीज—“नाचीज” का मतलब आप समझते हैं न?—मामूली—आदमी

के पास भी रहता है। तो फिर जो इस विषय का मंत्री है, उसके पास यह इत्तिला न रहे, यह तो बड़ी अदभुत बात है।

श्री क्रिष्णवर्दीन अली अहमद : सवाल यह था कि क्या हमारा और पम्पिंग सेट बनाने का इरादा है या नहीं। अगर इस इन्फर्मेशन की जरूरत है कि हर एक सूबे में कितने पम्प हैं। तो मैं मंजूर कर दे दूंगा।

डा० राम मनोहर लोहिया : मंत्री महोदय की पार्टी के सचिव, श्रीराम रेड्डी, ने बताया है कि.....

Mr. Speaker: What the Minister says is more correct than what the other people say.

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, अगर आप कुछ तो बता दें?

श्री क्रिष्णवर्दीन अली अहमद : मैंने कहा है कि यह इन्फर्मेशन मेरे पास इस वक्त नहीं है।

Mr. Speaker: It is there and he will give you but not now.

Shri S. M. Banerjee: May I know whether any funds have been allotted by the Centre to the various State Governments, especially U.P. and Bihar, for installing pumping sets in the drought-affected areas and is so, what is the amount allotted?

Shri F. A. Ahmed: For the purpose of those affected areas, a special programme has been undertaken and funds have been allotted. That figure is not with me; I will ask the Food Minister to give that.

Shri R. Barua: May I know whether some of the pumping sets in different States are lying idle and, if so, how Government want to put them to use?

**Shri F. A. Ahmed:** Such pumping sets as are lying idle should be repaired. For that, all the spares and component parts are available.

**Shri R. Barua:** It means that Government agree that some pumping sets are lying idle.

**Mr. Speaker:** Shri Sarjoo Pandey.

**श्री सरजू पाण्डेय :** मंत्री महोदय ने बताया है कि जिन इलाकों में सूखा पड़ा हुआ है, वहाँ पम्पिंग सेट लगाए गए हैं। मेरी सूचना है कि उत्तर प्रदेश में जिन इलाकों में सूखा पड़ा है, वहाँ पर जो डीजल के पम्प लगाए गए हैं, उनके लिए किसानों से बहुत हाई चार्ज किया जा रहा है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि जिन इलाकों में सूखा पड़ा है, क्या वहाँ पर पम्पिंग सेट्स के लिए चार्ज करना बन्द कर दिया जायेगा।

**श्री कृष्णचंद्र शर्मा अग्रवाल :** जो सवाल पूछा गया है, मैं उसकी इत्तिला फूड मिनिस्टर को दे दूंगा। जहाँ सूखा पड़ा है, वहाँ जरूर पम्पिंग सेट पहुंचाने की कोशिश की जायेगी।

**Shri M. N. Naghoor:** With reference to (a), we have three units of Hindustan Machine Tools in Bangalore, Hyderabad and Tiruchi. Now we learn that the goods manufactured by these units are not moving fast in the market. Will Government examine the feasibility of entrusting the manufacture of pump sets to the H.M.T. units in the country?

**Shri F. A. Ahmed:** Yes, Sir; that is being done.

**श्री कानिश्चर सिंह :** इस प्रश्न का एक भाग यह भी है कि क्या पब्लिक सेक्टर में पम्पिंग सेट बनाए जायेंगे। देश का जो सबसे बड़ा रेलवे वर्कशॉप जमालपुर, बिहार में है, वहाँ पर मशीनिंग कंसेप्टि

श्रीर कास्टिंग कंसेप्टि बहुत ज्यादा एबिलेबल है और इसलिए वहाँ पर सस्त में पम्प बन सकते हैं। वहाँ पर रेलवे के लिए सामान बन रहा है। चूंकि वहाँ पर सामान कम बनता है, इसलिए उनकी कीमत बहुत ज्यादा पड़ती है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि सरकार पम्पिंग सेट बनाने के लिए उत वर्कशॉप का उपयोग क्यों नहीं करती है।

**श्री कृष्णचंद्र शर्मा अग्रवाल :** जहाँ तक मेरी इन्फॉर्मेशन है, इस वक्त हमें जितने पम्पों की जरूरत है, वे हम मौजूदा यूनिट्स से बना सकते हैं। अगर कहीं और भी बनाने की जरूरत हो, तो उसमें कोई रूकावट नहीं मालूम पड़ती है।

**श्री कानिश्चर सिंह :** हम लोग जानते हैं कि बिहार में कितनी मुँहमरो है और पम्पों की कितनी कमी है। लेकिन सरकार इसको देखती नहीं है।

**Shri ShivaJitro S. Deshmukh:** Will the Minister tell us what is the basis of this assessment of national requirements of pumping sets? Is it based on this factor that the moment a pump set is installed in a river or a well or any other source of water, the water-drawing capacity of that source is almost doubled? Are the assessments based on the probable water sources and their lifting arrangements by means of pumps or only on the market demand?

**Shri F. A. Ahmed:** The assessment has been made and according to the assessment for the Third Five Year Plan we have produced 1.5 lakh pumps more than what was targetted for in the Third Five Year Plan. So far as the Fourth Five Year Plan is concerned the target fixed is about 4 lakh pumps per year. We have already reached a figure of nearly 2.93,000 and we hope to see that the figure fixed is soon reached.

**Shri Shivajirao S. Deshmukh:** My question was not as to what is the assessment but what is the basis of the assessment.

**Shri F. A. Ahmed:** The basis of assessment is the demand in areas for the purpose of utilising these pumps to supply water in rural areas.

**Shri N. K. Somani:** As a result of two consecutive droughts it may be that there is no shortage of pumping sets today. But if we have a good monsoon and a good crop this year, I expect the demands for pumping sets will shoot up next year all of a sudden. Would the Government be ready at that time so that they are not caught napping and there is no shortage of pumping sets next year in the country?

**Shri F. A. Ahmed:** These have been taken into consideration and the target fixed by the Planning Commission.

**श्री क० ना० तिवारी :** क्या यह सही है कि 20 और 40 हासों पावर के जैसा कि डाक्टर साहब ने पूछा नदियों का, लेकिन तालाब और झीलों के पानी को उठा करके कृषि के उपयोग में लाने के लिए इनकी बहुत कमी है और केवल बिहार में 33 हजार अप्लीकेशंस पड़ी हुई हैं जिनको कि पम्पिंग सेट नहीं मिल रहा है, इतनी कमी है, यदि यह बात सही है तो इसके लिए सरकार क्या कदम उठा रही है? यह जल्दी बन सके इसके लिए प्राइवेट सेक्टर में भी और इसको बनाने के लिए लोग तैयार हों तो क्या सरकार उनको बनाने के लिए इजाजत देने के लिए तैयार है?

**श्री फखरुद्दीन खली अहमद :** जैसा कि मैंने बताया हाई कमिश्नर के और ऐसे पम्प बनाने के लिए पब्लिक सेक्टर में हमारे पास रिपोर्ट आ गई है और वह रिवाइज भी हो गया है। यह काम जल्दी ही शुरू होने वाला है, करीब करीब 12

करोड़ रुपये की लागत लगा कर के यह काम हम करेंगे ताकि ऐसी चीजें हमारे मुल्क में बन सकें।

**Shri K. Lakkappa:** Keeping in view the fact that the agricultural programme should be defence oriented, has any survey been made in this country to manufacture pump sets to meet the needs of this country to have the agricultural programme defence oriented; if so, may I know whether any manufacturing centres are under consideration of the Government in the various States?

**Shri F. A. Ahmed:** The programme for production of pump sets has been made on the basis of assessment made by the Planning Commission and it is from year to year revised. It is on the basis of that revision that the production is going on, and Government also proposes to have high-compressor pumps in the public sector.

**Shri Amrit Nohata:** The hon. Minister just said that the production of pumping sets is adequate in the country. In that case, why is it that quite a large number of tube-wells in the north-western Rajasthan dug by the E.T.O. have been plugged back for want of pumping sets?

**Shri F. A. Ahmed:** I am not aware of it.

**श्री रघबीर सिंह शास्त्री :** श्रीमन्, गावों में किसानों को इन पम्पिंग सेट्स के मामलों में मिस्त्रियों की बड़ी भारी दिक्कत पड़ती है, उनका संचालन और मरम्मत करने वाले लोगों की दिक्कत पड़ती है और इनके अभाव में इनका चलाना बड़ा खर्चीला पड़ता है। तो क्या मैं सरकार से आशा करूँ कि वह छोटे छोटे ऐसे कोर्स या ऐसी योजनाएँ चलायेगा कि जिनसे किसान उनमें आ कर इनका चलाना

श्री मरम्मत करना सोच लें और अपने आप अपना काम चला सकें ?

श्री कृष्णचंद्रीन अली अहमद : यह पम्प सेट जो हैं जैसे कि मैंने बताया ज्यादातर प्राइवेट इंस्ट्रुज बनाती हैं और मैं यह समझता हूँ कि पंचायत का यह फर्ज है कि जब कि पंप सेट गांवों में इस्तेमाल किए जा रहे हैं तो किस तरह से उनकी मरम्मत की जाय उसके बारे में सोच समझ कर वह पंचायत वाइज या जिले वाइज इस काम को ले तो ज्यादा उससे उनको लाभ हो गा ।

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री : पंचायत ही सारे काम कर ले तो सरकार क्या करेगी?

**Shrimati Lakshmikanthamma:** In the report submitted to this House on the Demands for Grants relating to the Ministry of Agriculture it is said that the units of pumping sets will be increased three-fold. Keeping in view the extensive demand for pumping sets from the Ministry of Agriculture and also the crash programme that will be taken up, may I know whether Government will take care to see that these programmes do not suffer due to want of pumping sets?

**Shri F. A. Ahmed:** No, Sir; it will not suffer. I may inform the hon. Member that the production of pump sets has increased according to the assurance given by the Food Ministry. In 1961 the production was 1,73,000; in 1965 it shot up to 2,18,000 and in 1966 to 2,93,000. Very soon we shall be reaching the target fixed for the Plan.

**Shri Jyotirmoy Basu:** We are going to produce baby tractors and these baby tractors can be used for running the pump sets. Has that been borne in mind by the persons who are designing this?

**Shri F. A. Ahmed:** That will be kept in view.

#### Drinking water in Railway compartments

\*1442. **Shri Yashpal Singh:** Will the Minister of Railways be pleased to state:

(a) whether Government are considering a proposal to provide drinking water in Railway compartments; and

(b) if so, when a decision is likely to be taken in the matter?

**The Deputy Minister in the Ministry of Railways (Shri S. C. Jamir):**

(a) The proposal has already received consideration and has been introduced in certain long as well as short distance trains. Railways have also been advised to progressively extend this facility to cover important long distance trains, after making satisfactory arrangements to provide this service.

(b) Does not arise.

श्री यशपाल सिंह : सरकार ने इसे बात पर गौर किया है कि एयर कंडीशन में इतना पानी होता है और जो लोग ठन्डे में चलते हैं जिसमें कभी प्यास नहीं लगती उनके लिए तो पानी हमेशा भरा रहता है और जिनकी कमाई यह सरकार जाती है और जो रात दिन टैक देते हैं उनको पानी नहीं मिलता ? क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी कि एयर कंडीशन और फर्स्ट क्लास को छोड़ कर के सबसे पहले थर्ड क्लास में पानी का इन्तजाम किया जाय?

**The Minister of State in the Ministry of Railways (Shri Parimal Ghosh):** In accordance with the policy to improve the amenities in the third class and other compartments, the Railways have already taken the measures to provide water containers in the third class sleeper